

गंतास्मिन्मिष्यामि पदवीं आवृण्यं ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

सोहमद्यथाकामंक्षत्रधर्ममुपास्यतं ॥ गंताऽस्मिपदवींराज्ञःपितुश्चापिमहात्मनः ॥ २४ ॥ अद्यस्वप्स्यंतिपांचालाविश्वस्ताजितकाशिनः ॥ विमुक्तयुग्यकव
 चाहर्षेणचसमन्विताः ॥ २५ ॥ जयंमत्वात्मनश्चैवश्रांताव्यायामकर्षिताः ॥ तेषांनिशिप्रसुप्तानांमुस्थानांशिबिरेस्वके ॥ २६ ॥ अवस्कंदंकरिष्यामिशिविर
 स्याद्यदुष्करं ॥ तानवस्कंद्यशिबिरेप्रेतभूतविचेतसः ॥ २७ ॥ सूदयिष्यामिविक्रम्यमघवानिवदानवान् ॥ अद्यतान्सहितान्सर्वानधृष्टद्युम्नपुरोगमान् ॥ २८ ॥
 सूदयिष्यामिविक्रम्यकक्षंदीमइवानलः ॥ निहत्यचैवपांचालान्शान्तिलब्ध्याऽस्मिसत्तम ॥ २९ ॥ पांचालेषुभविष्यामिसूदयन्नद्यसंयुगे ॥ पिनाकपाणिःसंकुहः
 स्वयंरुद्रःपशुष्विव ॥ ३० ॥ अद्याहंसर्वपांचालान्निहत्यचनिरुष्यच ॥ अर्दयिष्यामिसंहृष्टोरणेपांडुसुतांस्तथा ॥ ३१ ॥ अद्याहंसर्वपांचालैःकृत्वाभूमिशरीरि
 णीं ॥ प्रहृत्यैकैकशस्त्रेषुभविष्याम्यनृणःपितुः ॥ ३२ ॥ दुर्योधनस्यकर्णस्यभीष्मसंधवयोरपि ॥ गमयिष्यामिपांचालान्यदवीमद्यदुर्गमां ॥ ३३ ॥ अद्यपांचा
 लराजस्यधृष्टद्युम्नस्यवैनिशि ॥ नचिरात्रमथिष्यामिपशोरिवशिरोबलात् ॥ ३४ ॥ अद्यपांचालपांडूनांशयितानात्मजान्निशि ॥ स्वङ्गेननिशितेनाजौप्रमथि
 ष्यामिगौतम ॥ ३५ ॥ अद्यपांचालसेनांतांनिहत्यनिशि सौप्तिके ॥ कृतकृत्यःसुखीचैवभविष्यामिमहामते ॥ ३६ ॥ इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकेपर्वणिद्रौणि
 मंत्रणायांतृतीयोऽध्यायः ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ १ ॥ अनुयास्यावहेत्वातुप्रभातेसहितावुभौ ॥ अद्यरात्रौविश्रमस्वविमुक्तकवचध्वजः ॥ २ ॥ अहंत्वामनुयास्यामिकृतवर्माचसात्वतः ॥ परानभिमुखंयांतर
 थावास्यायदंशितौ ॥ ३ ॥ आवाभ्यांसहितःशत्रून्श्वोनिहंतासमागमे ॥ विक्रम्यरथिनांश्रेष्ठपांचालान्सपदानुगान् ॥ ४ ॥ शक्तस्त्वमसिविक्रम्यविश्रमस्वनि
 शामिमां ॥ चिरेतेजाग्रतस्तातस्वपतावन्निशामिमां ॥ ५ ॥ विश्रांतश्चविनिद्रश्चस्वस्यचित्तश्चमानद ॥ समेत्यसमरेशत्रून्वधिष्यसिनसंशयः ॥ ६ ॥ नहित्वारथि
 मांश्रेष्ठप्रगृहीतवरायुधं ॥ जेतुमुत्सहेशश्वदपिदेवेषुवासवः ॥ ७ ॥ कृपेणसहितंयातं गुप्तं चकृतवर्मणा ॥ कौद्रौणिशुधिंसंरब्धंयोधयेदपिदेवराट् ॥ ८ ॥ तेवयं
 निशि विश्रांताविनिद्राविगतज्वराः ॥ प्रभातायांरजन्यावैनिहनिष्यामशात्रवान् ॥ ९ ॥

मोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥